साहित्य और संचार माध्यम

अखिलेश जैसल
शोध छात्र

डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
शोध निर्देशक
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग
म.स.गा. महाविद्यालय, मालेगाँव कैंप जि.नाशिक

शोध सार

हिंदी साहित्य के क्षेत्र में संचार माध्यम एक स्तम्भ के रूप में दिखाई देता है । आज पूरी दुनियाँ में हर एक साहित्यकार अपना साहित्य संचार माध्यम से जोड़ना चाहता है और अपने साहित्य को प्रचारित प्रसारित करने के लिए जनसंचार माध्यम से जोड़ देता है । हमारे दैनिक जीवन में संचार का अत्यंत महत्त्वपूर्ण है । वास्तव में संचार जीवन की निशानी है । मनुष्य जब तक जीवित रहता है, संचार करता रहता है । एक बालक भी रोकर या चिल्लाकर अपनी माता का ध्यान अपनी ओर खींचता है । जो बोल या सुन नहीं सकता वह भी सांकेतिक भाषा का प्रयोग करके संचार करता है । परिणाम स्वरूप यह कहा जा सकता है संचार खत्म होने का अर्थ मृत्यु है । संसार के प्रत्येक जीव आपस में संचार करते हैं लेकिन मनुष्य की संचार करने की क्षमता बाकी जीवों की तुलना में बहुत अलग व अच्छी है । मनुष्य के सामाजिक विकास में संचार की सबसे अधिक भूमिका रहती है ।

बीज शब्द– संचार, मानव, संस्कृति, आदि

संचार मनुष्य को एक–दूसरे से जोड़ता है । सभ्यता का विकास संचार व संचार के माध्यमों से जुड़ा हुआ है । मनुष्य के द्वारा भाषा एवं लिपि आदि का विकास किया है, जिसका मुख्य उद्देश्य संदेशो का आदान–प्रदान रहा है । संदेशो के आदान–प्रदान में लगने वाले समय और दूरी को कम करने के लिए ही संचार के माध्यमों की खोज की गई है । भविष्य में भी खोजे हुए माध्यमों को अपडेट करने का प्रयास लगातार ज़ारी रहेगा ।

संचार और जनसंचार के विभिन्न माध्यम जैसे– टेलीफोन, इंटरनेट, फ़ैक्स, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविज़न और सिनेमा आदि के ज़रिये व्यक्ति संदेशों का आदान–प्रदान कम समय में कर पाता है । संचार माध्यमों के विकास के साथ ही भौगोलिक दूरियाँ कम होने के साथ–साथ सांस्कृतिक और मानसिक रूप से भी लोग एक दूसरे के नज़दीक आ रहे हैं । परिणाम स्वरूप कुछ लोगों का मानना है कि वर्तमान में दुनिया गाँव में बदल रही है । आज कोई भी साहित्य हो चाहे हिंदी, अंग्रेजी, मराठी या अन्य भाषाओं का साहित्य हो, जिस प्रकार हिंदी सम्पर्क भाषा के रूप में अपना स्थान बनाती दिख रही है, वह शुभ संकेत है । हिन्दी के इस सामाजिक जुड़ाव का श्रेय हम सीधे–सीधे संचार माध्यमों को दे सकते हैं । हिन्दी में आज भार नहीं संस्कार और सरोकार भी मौजूद है । हिन्दी संचार माध्यमों ने विशेषकर दृश्य–जनसंचार माध्यमों ने हिन्दी की जो दिशा निर्धारित की है वह उसे विश्व की एक सम्पर्क भाषा बनाने के लक्ष्य तक पहुँच पाने में सहायक बनेगी ऐसा विश्वासपूर्वक कहा जा सकता है । आज हिन्दी भाषा, अंग्रेजी की संप्रभुता को चुनौती देती हुई तथा अपनी दशा और दिशा को प्रमाणित करती हुई, सामाजिक ही नहीं, राजनैतिक सरोकारों की प्रमुख भाषा के रूप में न केवल भारत में बल्कि समूचे विश्व में अपना सम्मानजनक स्थान निर्धारित करती दिख रही है, उसका सीधा–साधा श्रेय हिन्दी साहित्य संचार माध्यमों को ही जाता है । संचार माध्यमों ने हिंदी साहित्य के वैश्विक रूप को गढ़ने में पर्याप्त योगदान दिया है । भाषाएँ संस्कृति की वाहक होती हैं और संचार माध्यमों पर प्रसारित कार्यक्रमों से समाज के

बदलते सच को हिंदी के बहाने ही उजागर किया गया । डिजिटल दुनिया में हिंदी साहित्य की माँग अंग्रेजी साहित्य की तुलना में पाँच गुना ज्यादा तेज है । भारत में हर पांचवा इंटरनेट प्रयोगकर्ता हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा का उपयोग करता है । हिन्दी भाषा का विश्वस्तरीय साहित्य तथा साहित्यकार आदि का विशेष योगदान है ।

संचार क्या है?

संचार शब्द की उत्पत्ति 'चर' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है– चलना या एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचना । 'संचार' से हमारा तात्पर्य दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच सूचनाओं, विचारों और भावनाओं का आदान–प्रदान है । मशहूर संचारशास्त्री विल्बर श्रैम के अनुसार" संचार अनुभवों की साझेदारी हैं ।'

संचार के तत्व

संचार एक प्रक्रिया है । इस प्रक्रिया में कई तत्व शामिल हैं। इनमें से प्रमुख तत्व निम्नलिखित है–

1. स्त्रोत या संचारक– संचार–प्रक्रिया की शुरुआत 'स्त्रोत' या 'संचारक' से होती है। जब स्त्रोत या संचारक एक उद्देश्य के साथ अपने किसी विचार, संदेश या भावना को किसी और तक पहुँचाना चाहता है, तो संचार–प्रक्रिया की शुरुआत होती है । जैसे हमें किताब की जरूरत होने पर जैसे ही हम किताब माँगने की सोचते हैं, संचार की प्रक्रिया शुरू हो जाती है । किताब माँगने के लिए हम अपने मित्र से बातचीत करेंगे या उसे लिखकर संदेश भेजेंगे । बातचीत या संदेश भेजने के लिए हम भाषा का सहारा लेते हैं ।

2. कूटीकृत या एनकोडिंग– यह संचार की प्रक्रिया का दूसरा चरण है । सफल संचार के लिए जरूरी है कि आपका मित्र भी उस भाषा यानी कोड से परिचित हो जिसमें आप अपना संदेश भेज रहे हैं । इसके साथ ही संचारक का एनकोडिंग की प्रक्रिया पर भी पूरा अधिकार होना चाहिए । इसका अर्थ यह हुआ कि सफल संचार के संचारक का भाषा पर पूरा अधिकार होना चाहिए । साथ ही उसे अपने संदेश के मुताबिक बोलना या लिखना भी आना चाहिए ।

3. संदेश– संचार–प्रक्रिया में संदेश का बहुत अधिक महत्व है। किसी भी संचारक का सबसे प्रमुख उद्देश्य अपने संदेश को उसी अर्थ के साथ प्राप्तकर्ता तक पहुँचाना है। इसलिए सफल संचार के लिए जरूरी है कि संचारक अपने संदेश को लेकर स्वयं पूरी तरह से स्पष्ट हो । संदेश जितना ही स्पष्ट और सीधा होगा, संदेश के प्राप्तकर्ता को उसे समझना उतना ही आसान होगा ।

4. माध्यम (चैनल)– संदेश को किसी माध्यम (चैनल) के जरिये प्राप्तकर्ता तक पहुँचाना होता है । जैसे हमारे बोले हुए शब्द ध्वनि तरंगों के जरिये प्राप्तकर्ता तक पहुँचते हैं, जबकि दृश्य संदेश प्रकाश तरंगों के जरिये । इसी तरह वायु तरंगों के जरिये भी संदेश पहुँचते हैं । जैसे खाने की खुशबू हम तक वायु तरंगों के जरिये पहुँचती है । स्पर्श या छूना भी एक तरह का माध्यम है । इसी तरह टेलीफ़ोन, समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और फ़िल्म आदि विभिन्न माध्यमों के जरिये भी संदेश प्राप्तकर्ता तक पहुँचाया जाता है ।

5. प्राप्तकर्ता या रिसीवर– यह प्राप्त संदेश का कूटवाचन अर्थात उसकी डीकोडिंग करता है। डीकोडिंग का अर्थ है प्राप्त संदेश में निहित अर्थ को समझने की कोशिश। यह एक तरह से एनकोडिंग की उलटी प्रक्रिया है। इसमें संदेश का प्राप्तकर्ता उन चिहनों और संकेतों के अर्थ निकालता है । जाहिर है कि संचारक और प्राप्तकर्ता दोनों का उस कोड से परिचित होना जरूरी है ।

6. फीडबैक– संचार–प्रक्रिया में प्राप्तकर्ता की इस प्रतिक्रिया को फीडबैक कहते हैं । संचार–प्रक्रिया की सफलता में फ़ीडबैक की अहम भूमिका होती है । फ़ीडबैक से ही पता चलता है कि संचार–प्रक्रिया में कहीं कोई बाधा तो नहीं आ रही है । इसके अलावा फ़ीडबैक से यह भी पता चलता है कि संचारक ने जिस अर्थ के साथ संदेश भेजा था वह उसी अर्थ में प्राप्तकर्ता को मिला है या नहीं? इस फ़ीडबैक के अनुसार ही संचारक अपने संदेश में सुधार करता है और इस तरह संचार की प्रक्रिया आगे बढ़ती है ।

7. शोर– संचार प्रक्रिया में कई बाधाएँ भी आती हैं। इन बाधाओं को शोर (नॉयज) कहते हैं। संचार की प्रक्रिया को शोर से बाधा पहुँचती है। यह शोर किसी भी किस्म का हो सकता है। यह मानसिक से लेकर तकनीकी और भौतिक शोर तक हो सकता है। शोर के कारण संदेश अपने मूल रूप में प्राप्तकर्ता तक नहीं पहुँच पाता। सफल संचार के लिए संचार प्रक्रिया से शोर को हटाना या कम करना बहुत जरूरी है।

संचार के प्रकार

संचार विभिन्न प्रकार के होते हैं, पर वे परस्पर काफी मिले–जुले होते हैं। इन्हें अलग करके देखना कठिन होता है। संचार के निम्नलिखित रूप हैं–

1. सांकेतिक संचार– जब हम किसी व्यक्ति को संकेत या इशारे से बुलाते हैं तो इसे सांकेतिक संचार कहते हैं। अपने से बड़ों को प्रणाम करते हुए हाथ जोड़कर प्रणाम करना मौखिक संचार का उदाहरण है। मौखिक संचार के समय चेहरे और शरीर के विभिन्न अंगों की मुद्राओं की मदद ली जाती है। खुशी, प्रेम, डर आदि अमौखिक संचार द्वारा व्यक्त किया जाता है।

2. अंत:वैयक्तिक (इंटरपर्सनल) संचार– जब हम कुछ सोच रहे होते हैं, कुछ योजना बना रहे होते हैं या किसी को याद कर रहे होते हैं तो यह भी एक संचार है। इस संचार–प्रक्रिया में संचारक और प्राप्तकर्ता एक ही व्यक्ति होता है। यह संचार का सबसे बुनियादी रूप है। इसे अंत:वैयक्तिक (इंट्रपर्सनल) संचार कहते हैं। हम जब पूजा, इबादत या प्रार्थना करते वक्त ध्यान में होते हैं तो वह भी अंत:वैयक्तिक संचार का उदाहरण है। किसी भी संचार की शुरुआत यहीं से होती है।

3. समूह संचार– इस संचार में हम जो कुछ भी कहते हैं, वह किसी एक या दो व्यक्ति के लिए न होकर पूरे समूह के लिए होता है। समूह संचार का उपयोग समाज और देश के सामने उपस्थित समस्याओं को बातचीत और बहस–मुबाहिसे के जरिये हल करने के लिए होता है। संसद में जब विभिन्न मुद्दों पर चर्चा होती है तो यह भी समूह संचार का ही एक उदाहरण है।

4. जनसंचार– जब हम व्यक्तियों के समूह के साथ प्रत्यक्ष संवाद की बजाय किसी तकनीकी या याँत्रिक माध्यम के जरिये समाज के एक विशाल वर्ग से संवाद कायम करने की कोशिश करते हैं तो इसे जनसंचार कहते हैं। इसमें एक संदेश को याँत्रिक माध्यम के जरिये बहुगुणित किया जाता है ताकि उसे अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जा सके। इसके लिए हमें किसी उपकरण या माध्यम की मदद लेनी पड़ती है–मसलन अखबार, रेडियो, टी.वी., सिनेमा या इंटरनेट। अखबार में प्रकाशित होने वाले समाचार वही होते हैं लेकिन प्रेस के जरिये उनकी हजारों–लाखों प्रतियाँ प्रकाशित करके विशाल पाठक वर्ग तक पहुँचाई जाती हैं।

साहित्य और संचार माध्यम का अंत:संबंध

संचार माध्यम ने आधुनिक विकास के समय और दूरी की सीमा को कम कर दिया हैं। आज के युग में साहित्य और संचार माध्यम का अंतरसंबंध एक अनोखा सम्बन्ध बन जाता हैं जो साहित्य की हर विधा को जन– जन तक पहुँचाने का कार्य करता हैं। रेडियो, TV, इंटरनेट और अखबार–जनसंचार के इन माध्यमों का उपयोग समाचारों की प्रस्तुति के लिए भी होता है। केवल समाचारों की बात करे तब भी हमारे सामने यह स्पष्ट होता चला जाता है कि इन माध्यमों से मुद्रित प्रसारित समाचारों के लेखन और प्रस्तुत है और देखे चुने गए समाचारों की लेखन शैली भाषा और इनकी प्रस्तुति में अंतर है। पढ़ें सुने और देखें सुने गए समाचारों की लेखन शैली भाषा और प्रस्तुति में इस अंतर की पहचान आवश्यक है।

उपसंहार

उपर्युक्त तथ्यों के माध्यम से साहित्य और संचार माध्यम का एक विशेष सम्बन्ध रहा हैं जिसे हम लोग साहित्य की विधाओं में देख सकते हैं। जनसंचार माध्यमों में द्वारपाल की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है। यह उनकी ही जिम्मेदारी है

कि वे सार्वजानिक हित, पत्रकारिता के सिद्धांतों, मूल्यों और आचार संहिता के अनुसार सामग्री को संपादित करें और उसके बाद ही उनके प्रसारण या प्रकाशन की इजाजत दें ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –

1. https://sahityanazm.com/summary-review-janasanchaar-maadhyam-c|ass-11/

2. https://www.thecore.page/2019/09/drshy-janasanchaar-maadhyamon-|9odnF.htm|

3.https://hi.unionpedia.org/%E0%A4%B9%E0%A4%BF%E0%A4%A8%E0%A5%8D%E0%A4%A6%E0%A5%80_%E0%A4%95%E0%A5%87_%E0%A4%B8%E07%A4%82%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0_%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%AE

4.https://www.cbsetuts.com/ncert-so|ut|ons-for-c|ass-11-hindi-core-janasanchaar-maadhyam-aur-|ekhan-janasanchaar-maadhyam/

5. संचार और संचार माध्यम – डॉ चंद्रप्रकाश मिश्र – संजय प्रकाशन

6. https://www.hindikeguru.com/2021/12/vibhinn-madhyam-ke-|iye-|ekhan.htm|

7. http://iimc.nic.in/content/Hindi/231_1_SancharMadhyamHindi.aspx

8.https://zietchandigarh.kvs.gov.in/sites/defau|t/fi|es/%E0%A4%85%E0%A4%AD%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B8%20%E0%A4%85%E0%A4%AD%E0%A4%BF%E0%A4%B5%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%95%E0%A5%8D%E0%A4%A4%E0%A4%BF%20%E0%A4%94%E0%A4%B0%20%E0%A4%AE%E0%A4%BE%E0%A4%A7%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%AE.pdf